पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.08.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के

36 वें राष्ट्रीय अधिवेशन

के अवसर पर अपनी सहयोग राशी

101/-रूपये

भेज कर युवा निर्माण में योगदान दें।

—महेन्द्र भाई, महामन्त्री

वर्ष-30 अंक-30 भाद्रपद-2071 दयानन्दाब्द 190 16 अगस्त से 31 अगस्त 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.08.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश का प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न

वेदों की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने से ही कल्याण हो सकता है- आर्य नेता स्वामी आर्य वेश

आर्य समाज, शामली के मंच पर बांये से श्री प्रवीन आर्य, डा.अनिल आर्य, स्वामी आर्य वेश जी, श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्री आनन्दप्रकाश आर्य, द्वितीय चित्र में केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री संजीव बालियान के पिता श्री डा. सुरेन्द्र सिंह जी का स्वागत करते स्वामी आर्य वेश जी,डा. अनिल आर्य, श्री रघुवीरसिंह आर्य, श्री पूरनचन्द आर्य व श्री सुशील शर्मा आदि।

शामली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश के तत्वावधान में आर्य समाज, शामली के प्रांगण में ''प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन'' का भव्य आयोजन प्रदेश अध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश आर्य की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाजियों ने पहुॅच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प दोहराया व वेदों की शिक्षाओं को जन जन तक पंहुचाने का निश्चय किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश का अभिनन्दन किया गया, उन्होंने युवा पीढ़ी को आह्वान किया कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा पीढ़ी का दायित्व बढ़ गया है, अब युवकों को जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद के विरूद्वआगे आना होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम पहले राष्ट्र, फिर पार्टी व स्वयं के बारे में सोचें तभी राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। स्वामी जी ने घोषणा कि की 25,000 वेदों के नये सैट छपवा कर सस्ती दर पर जन जन तक पंहुचाया जायेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज का देश की आजादी की लड़ाई में सबसे अधिक योगदान रहा लेकिन आज देश अवनति की बढ़ रहा है क्या आज के दिन के लिये हमारे शहीदों ने शहादत देकर अग्रेजों को भगाया था, प्रदेश में वर्ग विशेष की तुष्टि करण की नीति चरम सीमा पर है तभी कभी मुजफफर नगर, बरेली ओर अब सहारनपुर में दंगें हो रहे है, यह चिन्ताजनक ओर दुर्भाग्यपूर्ण है। जब तक पूरे देश में एक समान आचार संहिता लागु नहीं होगी तब तक कोई समाधान निकलने वाला नहीं है। डा.आर्य ने पूरे हिन्दु समाज को आपसी मतभेद भुलाकर एक ओ३म् ध्वज के नीचे इक्ठ्ठा होने का आह्वान किया।

प्रान्तीय महामन्त्री प्रवीन आर्य ने कहा कि पाकिस्तान बार बार चेतावनियां देने के बावजूद भी अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा है, प्रतिदिन सीमा पर घुसपैठ के समाचार सुनने को मिलते रहते हैं तथा लगातार आंतकवादियों को संरक्षण व प्रशिक्षण देने का काम कर रहा है। समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके मददगारों को सख्ती से कुचले, देश की रक्षा की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि आज देश में कहीं पर पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाते है और कहीं तिरंगा जलाया जाता है सरकार को द्रढ़तापूर्वक ऐसे देशद्रोहियों से निपटना चाहिये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में जेल जाने वाले 80 प्रतिशत आर्य समाजी थे, आज राष्ट्र धर्म का पालन भी आर्य जनों को करना और करवाना भी है। श्री सुशील शर्मा ने कुशल मंच संचालन किया व ध्वजारोहण श्री रघुवीरसिंह आर्य जिला प्रधान ने किया।

आर्य नेता श्री पूरणचन्द आर्य, श्री अरविन्द संगल (चेयरमैन, नगर पालिका शामली), डा. सजीव बालियान सांसद के पिता जी, श्री महेन्द्र भाई, श्री धर्मपाल आर्य, श्री दिनेश आर्य, श्री सुनील गर्ग (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद), श्री शीशपाल आर्य, प्रान्तीय प्रभारी श्री रामकुमारसिंह आर्य, सुरेश आर्य, प्रमोद चौधरी, अशोक गुलाटी, श्री विरजानन्द, ब्र.दीक्षेन्द्र, धर्मवीर वर्मा, हरेन्द्र चौधरी, श्री राजपाल आर्य, श्री दिनेश आर्य, हेमलता आर्या, पूनम आर्या, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, श्री शिशुपाल आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे।

परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य का ऐस्कॉर्टस से स्वेच्छिक सेवा निवृति पर भव्य अभिनन्दन

रविवार, 10 अगस्त 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के ऐस्कॉर्टस लि. फरीदाबाद से 36 वर्ष सेवा करने के पश्चात समाज सेवा के लिये स्वेच्छिक सेवा निवृति लेने पर पर आर्य समाज, शालीमार बाग पश्चिमी, दिल्ली में डा.ओमप्रकाश मान की अध्यक्षता में भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में सैंकड़ो आर्य जनों ने पंहुच कर डा. अनिल आर्य को अपनी शुभ कामनायें प्रदान की। श्री नरेन्द्र आर्य सुमन के मनोहर गीतो ने समां बांध दिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्य वेश जी, आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री मायाप्रकाश त्यागी, वैदिक विद्वान डा. महेश विद्यालंकार, डा. धर्मपाल आर्य, श्रीमती ममता नागपाल (पार्षद), श्री सुदेश भसीन, श्री चमनलाल शर्मा, श्री ओम सपरा, श्री रणसिंह राणा, श्री कृष्णचन्द पाहुजा, श्री रामकुमार सिंह, श्री सन्तोष शास्त्री, श्री धर्मपाल आर्य, कै. अशोक गुलाटी, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री मनोहरलाल चावला, श्री वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री जवाहर भाटिया, श्री सुरेन्द्र कोहली, श्री मनोज दुआ, श्री डी. एल. नांरग, श्री रवि चड़डा, श्री देवेन्द्र भगत, श्री दिनेश आर्य, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री जीवनलाल आर्य, श्री आलोक भटनागर आदि गणमान्य प्रतिष्ठित जन उपस्थित थे। महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने समारोह का कुशल संचालन किया। सभी के लिये सुन्दर प्रीतिभोज का प्रबन्ध किया गया था।

'श्रावणी पर्व और हमारा समाज'

श्रावणी पूर्णिमा 10 अगस्त, 2014 को है और यह दिवस श्रावणी पर्व के रूप में आज पूरे देश में मनाया जा रहा है। इस दिन को भाई व बहिन के परस्पर अटूट पवित्र प्रेम बन्धन के रूप में रक्षा बन्धन के नाम सें भी मनाया जाता है। इस दिन पुराने यज्ञोपवीत उतार कर नये यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा भी है। हमारे आर्य समाज के गुरूकुलों में इस दिन नये ब्रह्माचारियों एवं ब्रह्मचारणियों का प्रवेश भी होता है। आईये, पहले श्रावणी पर्व पर विचार करते हैं।

श्रावणी भाब्द, श्रुति व श्रवण भाब्दों से जुड़ा है। श्रुति से श्रवण, श्रवण श्रावणी भाब्द बनकर आज का श्रावणी पर्व अस्तित्व में आयें हैं। श्रुति वेद को कहते हैं जिसका एक कारण आरम्भ में ब्रह्मचारियों को वेदों का ज्ञान श्रवण से व सुना कर कराया गया और कराया जाता रहा है। आज भी बहुत सी बाते सुनकर ही जानते हैं। सृश्टि उत्पन्न होने के साथ कागज, पुस्तकें, लेखन सामग्री आदि एक साथ अस्तित्व में तो आ नहीं सकते थे। अतः पुस्तक के द्वारा ज्ञान प्राप्ति सर्वथा असम्भव थी। ज्ञान के बिना एक दिन भी मनुश्य का काम भी नहीं चल सकता था। कहा गया है कि ज्ञान के बिना मनुश्य पशु समान होता है। सम्भवतः महर्शि दयानन्द की संगति किसी विद्वान ने यह बात कही है। यह वाक्य अपने स्थान पर पूर्णतः सत्य है। बिना ज्ञान के मनुश्य की स्थिति पशुओं से भी बदतर होती है। पशुओं को यह ज्ञान है कि उन्हें क्या खाना है, कैसे खाना है, उसे कैसे पचाना है व सोना जागना कैसे है। मनुश्य को अपने भोजन व उसके करने की विधि का ज्ञान भी परम्परा से होता है। यदि आरम्भ में किसी अन्य अलौकिक ज्ञानवान सत्ता के द्वारा ज्ञान न दिया जाये तो मनुश्य पशु से भी बदतर होगा। अतः परमात्मा ने ऋशियों के माध्यम से सभी मनुश्यों वा स्त्री व पुरूशों को चार वेदों का ज्ञान उनकी अन्तरात्माओं में भाशा व भाब्द–अर्थ–सम्बन्ध सहित स्थापित किया। इन चार ऋशियों को वेदों का ज्ञान मिलने पर इन्होंने व इनके बाद के आचार्यों ने बोल कर, कहकर, सुनाकर, वाणी का प्रयोग कर तथा श्रोता को सम्बोधित कर ईश्वर से प्राप्त ज्ञान वेदों को भाशा व इनके अर्थ ज्ञान सहित आगे बढ़ाने की परम्परा डाली। यदि ईश्वर वेद और भाशा का ज्ञान न देता तो सृश्टि के आरम्भ में पहली पीढ़ी के स्त्री पुरूशों का जीवन खतरे में पड़ जाता और वह अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते थे। जिस ईश्वर ने इस सृश्टि और मनुश्य आदि प्राणियों को बनाया, उसका कर्तव्य व दायित्व बनता था कि उसने जो जिह्वा, मुंह व कर्ण आदि उपकरण मनुश्यों के भारीरों में बनायें थे उनके उपयोग का पूर्ण ज्ञान भाशा व भाब्द–अर्थ–सम्बन्ध सहित उससे ही प्राप्त हो। और ऐसा ही हुआ भी, परमात्मा ने मनुश्यों को वेदों का ज्ञान दिया जो अपने आपमें पूर्ण व सर्वोत्तम है। इसके प्रमाण वेदों व इसके बाद ऋशियों द्वारा निर्मित ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। वेदों व श्रुति में आध्यात्मिक ज्ञान भी है तो भौतिक ज्ञान भी है। इन दोनों ज्ञानों से ही मनुश्य में पूर्णता आती है। वेदों में जो आध्यात्मिक ज्ञान है वह संसार में बाद में प्रचलित किन्हीं मतों व उनकी पुस्तकों में नहीं है। अपितु यह भी कह सकते हैं उन मतों मे वेद विरूद्ध व सत्य के विपरीत ज्ञान है जिससे मनुश्यों का कल्याण होने के स्थान पर अकल्याण हो रहा है। वेदों में ज्ञान, कर्म व उपासना तथा विज्ञान विशयों से सम्बन्धित ज्ञान है। इस ज्ञान को प्राप्त कर विज्ञान सहित सभी विशयों के ज्ञान का विस्तार किया जा सकता है। यहां यह भी बताना समीचीन है कि वेदों का ज्ञान सृश्टिक्रम के विपरीत न होकर अनुकूल है और इससे विज्ञान की उन्नति वर्तमान आधुनिक विज्ञान की भांति की जा सकती थी व की जा सकती है। सृश्टि के आरम्भ से ऐसा ही होता रहा है। इस सृश्टि की 1 अरब 96 करोड़ वर्शों की परम्परा में अनेक उत्थान पतन आये और गये। यह प्रायः नियम है कि पतन के बाद उत्थान व उत्थान के बाद पतन होता है। उत्थान का आधार ज्ञान का प्रचार व प्रसार है जो वेदों के द्वारा ही हो सकता है। वेद उत्थान का प्रतीक है और वेद रहित समाज व देश पतन के द्योतक है। इसी को ध्यान में रखकर वेदाध्ययन देश भर में सुचारू रूप से हो, श्रावणी पर्व का प्रचलन प्राचीन काल से हमारे ऋशियों द्वारा हुआ। इस दिन अपने संकल्प को पुनः स्मरण कर उसके प्रति समपिर्त होने का पर्व है। यज्ञ वायुमण्डल व जल की भाुद्धि, अच्छे स्वास्थ्य व निरोग जीवन का अनुश्ठान है। इसका भी इस पर्व के दिन किया जाना पर्व को महिमावान बनाता है और इसके अनुश्ठान का प्रावधान भी श्रावणी पर्व में है।

यहां हम पुनः दोहराना चाहते हैं कि श्रावणी का पर्व वेदों के अध्ययन करने का संकल्प लेकर उसे निभाने व पूरा करने, उसमें निश्णात होने का पर्व है। अपने स्वाध्याय के अनुभव से हमें लगता है कि सबसे पहले हमें सत्यार्थ प्रकाश को आद्योपान्त पढ़ना चाहिये, उसके पश्चात ऋग्वेदादिभाश्य भूमिका,

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

पश्चात मनुस्मृति, उपनिशद्, 6 दर्शन और इसके पश्चात ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्व वेद का अध्ययन करना चाहिये। ऋग्वेद व यजुर्वेद पर महर्शि दयानन्द के वेद भाश्य के अतिरिक्त अन्य ज्येश्ठ व श्रेश्ठ आर्य व वैदिक विद्वानों के वेद भाश्य पढ़ने चाहिये। हम अनुभव करते हैं कि इस प्रकार से अध्ययन करने से सामान्य नये अध्येता को लाभ हो सकता है। इसके साथ स्वाध्यायशील व्यक्तियों की अपनी एक मित्र–मण्डली बना लेनी चाहिये जिनसे समय–समय पर वेदाध्ययन विशय पर वार्तालाप करते रहना चाहिये। स्वाध्याय के लिय कुछ समय प्रातः, कुछ समय सायं या रात्रि में निर्धारित कर लेना चाहिये। दिन में जब भी अवकाश मिले तो जहां पाठ छोड़ा है, उसके आगे आरम्भ कर आगे बढ़ना चाहिये। हम जब अध्ययन करते हैं तो एक कागज पर दिनांक आरम्भ समय नोट कर लेते हैं। जब उस समय का अध्ययन समाप्त करते हैं तो पृश्ठ संख्या अंकित कर, पढ़े गये पृश्ठों की संख्या अंकित कर देते हैं। पुस्तक समाप्त करने पर हमारे पास एक यह जानकारी होती है कि हमने कब पुस्तक को पढ़ना आरम्भ किया कब कितना पढ़ा, कब व्यवधान आये, आदि आदि। वर्शों बाद भी यह जानकारी हमें उपलब्ध रहती है चूंकि वह कागज उस पुस्तिक के आरम्भ में ही रखा होता है। यह आवश्यक नहीं कि सभी पाठक इसे अपनायें, यह तो हमने अपना अनुभव बताया है।

रक्षा बन्धन की प्रथा भी इस श्रावणी पूर्णिमा के दिन से कुछ भाताब्दियों पहले जोड़ दी गई। रक्षा बन्धन का अर्थ है कि भाईयों द्वारा अपनी बहनों के सम्मान व जीवन की रक्षा का वचन व उसके लिए प्राणपण से स्वयं को समर्पित रखना। आज के समय में इस पर्व का महत्व और अधिक बढ़ गया है। देश में अशिक्षा व अज्ञान, अच्छे संस्कारों के अभाव, बेराजगारी तथा समाजिक विशमता के कारण देश में हिंसा व अत्याचार तथा अन्याय के कार्यों में वृद्धि हो रही है। आशा है कि नई सरकार इस समस्या पर विचार कर समाज को शिक्षित व संस्कारित करने का हर सम्भव कार्य करेगी। इस दिन सरकार की ओर से शिक्षा के प्रचार व प्रसार की योजनायें, मुख्यतः पूर्णत साधनहीन लोगों के लिए, घोशित की जानी चाहिये।

श्रावणी व रक्षा बन्धन पर्व के इस दिन बड़े–बड़े यज्ञ किये जाते हैं जिससे वायुमण्डल सुगन्धित होकर स्वास्थ्य की दृश्टि से हितकर होता है। यज्ञों का प्रभाव वर्शा पर भी पड़ता है। यजुर्वेद में प्रार्थना है कि हम जब–जब चाहें बादल आयें और वर्शा करें, हमारी सारी वनस्पितियां फलों व अमोघ ओशधियों से लदी हों। यह कोई निरर्थक प्रार्थना नहीं है। वेदों के यह भाब्द, 'निकामेनिकामे नः पर्जन्यों वर्शतु फलवत्यों नः ओशधयः पच्यन्तां योमक्षेमों नः कल्पताम्।' इस संसार के बनाने वाले सृश्टिकर्ता का ज्ञान हैं, अतः पूर्णतः सत्य है। यज्ञों में ही पुराने यज्ञोपवीत उतार कर नये यज्ञोपवीत धारण किये जाते हैं। यज्ञोपवीत शिक्षा व संस्कार का प्रतीक भी है। अतः यज्ञोपवीत धारण करने के बाद ऋशि, देव व पितृ ऋण से उऋण होने की भावना उत्पन्न होती है और यही मनुश्य के जीवन को जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। अतः श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन यज्ञोपवीत को बदलना उचित ही है। इस भावना के साथ कि हमें इस यज्ञोपवीत से जुड़ी भावना को पूरा करना है, इस पर्व को सभी ऋणों से उऋण होने के संकल्प को धारण के रूप में मनाना चाहिये। श्रावणी पर्व पर गुरूकुलों में उपनयन व वेदारम्भ संस्कार भी किये जाते हैं। ज्ञान का पर्व होने के कारण इस दिन यह संस्कार करने से इस दिन के महत्व में चार चांद लग जाते हैं। इस दिन उपनयन व वेदारम्भ संस्कार करना उचित ही है।

हम समझते हैं कि श्रावणी पर्व के मुख्य उद्देश्यों को जानकर उसे अपने जीवन में पूर्ण करने की भावना को जगा कर उसे पूरा कर जीवन को सफल बनाने का प्रयास सभी को करना चाहिये जिससे पर्व का उद्देश्य पूरा हो सके। श्रावणी पर्व के अवसर आप सभी को हार्दिक भाुभकामनायें। ईश्वर हम सबकों सुख, भाान्ति प्राप्त कराये और वेदों की ओर बढ़ने की प्ररेणा करें।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001 ,फोनः 09412985121

सभी आर्य युवक ध्यान देवें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन रविवार, 7 सितम्बर 2014 को प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक योग निकेतन, पंजाबी बाग, दिल्ली में होगा। सभी प्रान्तीय अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष, शाखाध्यक्ष अपनी संख्या से अविलम्ब सूचित करें। दिल्ली से बाहर से आने वाले आर्य युवक दिनांक–समय की सूचना दें जिससे समुचित प्रबन्ध किया जा सके। सभी आर्य युवक सफेद पेन्ट व सफेद कमीज या टी शर्ट पहन कर आयें।

–योगेन्द्र शास्त्री, प्रधान शिक्षक

युवा निर्माण ॥ ओ३म् ॥ राष्ट्र निर्माण

जहां नहीं होता कभी विश्राम आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

युवा संस्कार अभियान

ओ३म्
बलमुपास्व

गांव, गली, चौराहे पर, घर-घर यज्ञ रचायेंगे, धरती को स्वर्ग बनायेंगे

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य के नेतृत्व में

12 से 25 वर्ष तक के 10000 युवाओं को यज्ञोपवीत से दीक्षित करने का अभियान

4 दिन में 17 कार्यक्रम

1. **बृहस्पतिवार 21 अगस्त 2014** प्रात: 8 बजे
   स्थान: आर्य समाज मोहन गार्डन, अरिहन्त चौक, रविवार बाजार, सैनिक इन्क्लेव, सैक्टर-3, दिल्ली-59
   संयोजक: श्री मानवेन्द्र शास्त्री, श्री ओमबीर सिंह आर्य
   सम्पर्क: 9213326949, 9868803585
2. **बृहस्पतिवार 21 अगस्त 2014** प्रात: 9 बजे
   स्थान: भारत हाई स्कूल, रेवली, सोनीपत
   संयोजक: श्री सूरजभान, श्री हरिचन्द स्नेही, मनोहर लाल चावला
   सम्पर्क: 09416693290, 09813514699
3. **बृहस्पतिवार 21 अगस्त 2014** प्रात: 10 बजे
   स्थान: आर्य समाज न. 3, एन.एच.-3, फरीदाबाद
   संयोजक: श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री सत्यपाल शास्त्री
   सम्पर्क: 9210038065, 9810464750
4. **शुक्रवार 22 अगस्त 2014** प्रात: 9 बजे
   स्थान: आर्य समाज डी.ए.वी. शान्तिनगर, सोनीपत
   संयोजक: श्री मनोज चावला, श्री हरिचन्द स्नेही, श्री मनोहर लाल चावला, **सम्पर्क:** 09416693290, 09813514699
5. **शुक्रवार 22 अगस्त 2014** प्रात: 8 बजे
   स्थान: आदर्श विद्या मन्दिर, राम नगर, करनाल
   संयोजक: श्री रोशन आर्य, श्री हरेन्द्र चौधरी, श्री स्वतन्त्र कुकरेजा
   सम्पर्क: 09354129975, 09541555000, 09813041360
6. **शनिवार 23 अगस्त 2014** प्रात: 8.30 बजे
   स्थान: श्रद्धा मन्दिर हाई स्कूल, नहरपार, खेडी रोड, फरीदाबाद
   संयोजक: डॉ. गजराज सिंह आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य
   सम्पर्क: 9213771515, 9210038065
7. **शनिवार 23 अगस्त 2014** प्रात: 8 बजे
   स्थान: शक्तिपीठ पब्लिक स्कूल, संजय कॉलोनी, फरीदाबाद
   संयोजक: श्रीमती ज्योति व सत्यभूषण आर्य, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, **सम्पर्क:** 9818897097, 9818045919
8. **शनिवार 23 अगस्त 2014** प्रात: 6 बजे
   स्थान: बाल विद्या निकेतन, सैक्टर-12, सोनीपत
   संयोजक: श्रीमती पवन दहिया, स्वामी अमृतानन्द जी
   सम्पर्क: 09215535882
9. **शनिवार 23 अगस्त 2014** प्रात: 8.30 बजे
   स्थान: रोटरी पब्लिक स्कूल, सैक्टर-19, फरीदाबाद
   संयोजक: वीरेन्द्र योगाचार्य, प्रि. सुधा चौबे, श्री मनोज सुमन
   सम्पर्क: 9350615369, 9810064899
10. **शनिवार 23 अगस्त 2014** सायं 5 बजे
    स्थान: यादव भवन, नया टौला, पटना, बिहार
    संयोजक: श्री मुकेश राय, श्री भारतेन्दू कुमार
    सम्पर्क: 094300311520, 09430099239
11. **रविवार 24 अगस्त 2014** प्रात: 8 बजे
    स्थान: बी-43/1, ज्योति नर्सिंग होम के पीछे, पूर्वी ज्योति नगर, दिल्ली-110093
    संयोजक: श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री देवप्रिय, श्री रामदेव
    सम्पर्क: 9810487559, 9990098694
12. **रविवार 24 अगस्त 2014** प्रात: 8 बजे
    स्थान: आर्य समाज राजनगर-2, ओल्ड मेहरौली रोड, पालम कॉलोनी, दिल्ली
    संयोजक: श्री धर्मेन्द्र आर्य, श्री रतन आर्य, श्री हंसराज आर्य
    सम्पर्क: 9868748204, 9212148673, 99583457522
13. **रविवार 24 अगस्त 2014** प्रात: 9 बजे
    स्थान: गली न. 10, तेलीवालान बस्ती, आनन्द पर्वत, दिल्ली-5
    संयोजक: श्री राकेश आर्य, श्री राहुल आर्य
    सम्पर्क: 7503614065, 9013121321
14. **रविवार 24 अगस्त 2014** सायं 4 बजे
    स्थान: आर्य समाज श्रद्धानन्द कॉलोनी, भलस्वा, दिल्ली
    संयोजक: श्री अरूण आर्य, श्री नन्द लाल शास्त्री
    सम्पर्क: 9818530543
15. **रविवार 24 अगस्त 2014** प्रात: 8 बजे
    स्थान: आर्य समाज, शाहबाद मौहम्मदपुर, दिल्ली
    संयोजक: डा. जगराम यादव, श्री दिनेश सोलंकी, डॉ. मुकेश सुधीर, श्री जगबीर सिंह
    सम्पर्क: 9350099545, 9268103480
16. **रविवार 24 अगस्त 2014** सायं 3 बजे
    स्थान: आर्य समाज, चन्द्रपुरी, नवयुग मार्किट, गाजियाबाद
    संयोजक: श्री सुनील गर्ग, श्री प्रवीण आर्य, श्री सौरभ गुप्त
    सम्पर्क: 9810126067, 9911404423, 9971467978
17. **रविवार 24 अगस्त 2014** प्रात: 9 बजे
    स्थान: आर्य समाज समस्तीपुर, बिहार
    संयोजक: श्री नवल किशोर शास्त्री, श्री भारतेन्दु कुमार
    सम्पर्क: 09771257878, 09430099239

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
बौद्धिकाध्यक्ष (9810884124)

राम कुमार सिंह आर्य
प्रान्तीय संचालक (9868064422)

संतोष शास्त्री
प्रान्तीय महामन्त्री (9868754140)

शिशु पाल आर्य
प्रान्तीय उपसंचालक (9971550031)

सांसद श्री महेश गिरी व श्री प्रवेश वर्मा का अभिनन्दन

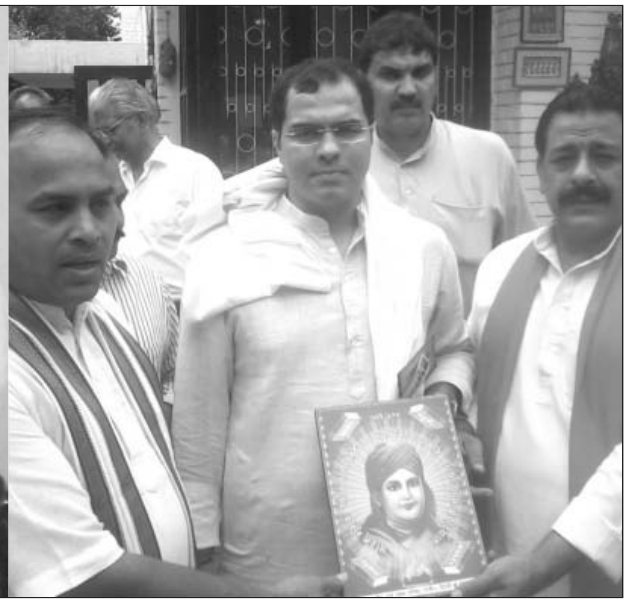

पूर्वी दिल्ली के सांसद श्री महेश गिरी का स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई व श्री रामकुमारसिंह आर्य, द्वितीय चित्र में पश्चिमी दिल्ली से सांसद श्री प्रवेश वर्मा को स्वामी दयानन्द जी का चित्र व शाल भेंट कर स्वागत करते डा. अनिल आर्य, श्री गवेन्द्र शास्त्री व श्री बलराज सेजवाल।

दिल्ली चलो दिल्ली चलो दिल्ली चलो

मिशन-25

यानि की 12 से 25 वर्ष के युवा लक्ष्यः

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का

36वां राष्ट्रीय अधिवेशन

रविवार, 7 सितम्बर 2014,

प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

योग निकेतन सभागार, रोड न. 78,

वैस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली

500 आर्य युवक पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे

यज्ञः-प्रातः 9 से 10 तक, प्रातः राशः-प्रातः 10 से 10.45,

ऋषि-लंगरः-1.30 से 2 तक व

सांय 5 से 6 बजे तकः-जलपान (पकोड़े-जलेबी-चाय)

सभी आर्य युवक, आर्य जन तैयारी प्रारम्भ कर दें

आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

डा.अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

कोटा में शिक्षण सामग्री वितरित

शनिवार 9 अगस्त 2014, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्वावधान में तीन विद्यालयों में शिक्षण सामग्री का वितरण किया गया। प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्डा व प्रधानाध्यापक श्री रामविलास शर्मा बधाई के पात्र हैं।

—अरविन्द पाण्डेय, प्रचार सचिव

शामली में पहुंचे कई जिलों से आर्य

रविवार, 3 अगस्त 2014 को परिषद् के उत्तर प्रदेश प्रान्तीय सम्मेलन में भारी संख्या में आर्य जनों ने पंहुच कर उत्साह का परिचय दिया। सम्मेलन की सफलता के लये हार्दिक बधाई। —प्रवीन आर्य,प्रान्तीय महामन्त्री

वर्ष 2015 का कलैन्डर

स्वामी दयानन्द का रंगीन चित्र, हिन्दी तिथि एवं पर्वो सहित

आर्ट पेपर पर सुन्दर आकर्षक छपाई

800/- रूपये प्रति सैकड़ा (1000 लेने पर समाज का नाम एवं पता, दूरभाष आदि की छपाई निःशुल्क की जाएगी।)

सम्पर्क सूत्रः **मयंक प्रिन्टर्स**

2199/64 नाई वाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

दूरभाषः 09810580474, 011-41548503

योगनिष्ठ स्वामी दिव्यानन्द जी का **राष्ट्रीय ''अमृत महोत्सव''**

रविवार, 16 नवम्बर 2014, प्रातः 10 से 2 बजे तक

योग निकेतन, पंजाबी बाग, दिल्ली। कृपया तिथियां नोट कर लें

स्वामी आर्यवेश - डा.अनिल आर्य

अध्यक्ष व मुख्य संयोजक अभिनन्दन समिति

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970